शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

की प्रस्तुति

गीतांजलि सृजन

(माह- फरवरी 2023)

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। #9458278429

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 01-02-2023

दिन- बुधवार

211

तर्ज- अगर आसमा तक मेरे हाथ जाते.

गीत- परिषदीय विद्यालय

अगर सरकारी स्कूल में हम अपने बच्चे पढ़ाते,
तो बच्चों का अच्छा भविष्य हम बनाते
कहीं दूर हमको नहीं जाना है चलकर,
गाँव के स्कूल में चलो नाम है लिखाते।।
अगर सरकारी.....

यहाँ पर शिक्षक गतिविधियाँ कराते,
बच्चों को खेल-खेल में है पढ़ाते।
बच्चे पूछेंगे प्रश्नो को सारे,
निष्कर्ष निकालेंगे बच्चे हमारे।
यहाँ अभिभावकों की बैठक कराते,
बच्चों की उपलब्धि उनसे बताते।।
अगर सरकारी.....

बच्चे यहाँ ताजा भोजन हैं पाते,
दूध और फल यहाँ पर है खिलाते।
ड्रेस के लिए पैसा भी आये,
पुस्तकें सारी स्कूल से पायें।
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा शिक्षक दिलाते,
बच्चों का अच्छा भविष्य हैं बनाते।।
अगर सरकारी.....

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 02-02-2023

दिन- गुरुवार

212

तर्ज- दुश्मन न करें.....

गीत- ये देश है हमारा.....

ये देश है हमारा, इसका नाम बड़ा है।
इस देश के ही दम पे, सारा विश्व खड़ा है।।

इससा नहीं है कोई, इसकी बात निराली।
माथे पे इसके, शान्तिरुपी हीरा जड़ा है।
इस देश के ही दम पे सारा विश्व खड़ा है।।

इसमें हुए हैं वीर, धर्म, न्यायपुजारी।
है स्वर्ग यहीं पे..भारत नाम पड़ा है,
इसके देश के ही दम पे सारा विश्व खड़ा है।।

सागर बुहारे इसको, तिलक करती हैं नदियाँ।
सब एक, धर्म सबके अलग, रत्न मढा है,
इस देश के ही दम पे, सारा विश्व खड़ा है।।

आजाद चमन आज शहीदों के दम पे है,
देखो! अहिंसा, सत्य हेतु, आज अड़ा है।
इस देश के ही दम पे, सारा विश्व खड़ा है,
ये देश है हमारा, इसका नाम बड़ा है।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 03/02/2023

दिन- शुक्रवार

213

तर्ज-ये गोटेदार लहँगा----

मेरा तिरंगा

ये प्यारा तिरंगा ले निकलूंगी शान से,
दुश्मन सब जायेंगे अपनी ही जान से।

मेरे देश का झण्डा है,
प्यारा ये तिरंगा है।
हम सबकी ख्वाहिश से,
हमने ये रंगा है।
जब लेकर इसको हम निकलेंगे शानसे।।

दुश्मन------

मेरे तिरंगे की आन निराली है,
इसकी शान सबसे ऊपर वाली है।
लहराता है जब ये लाल किले पर,
इसकी होती हर बात निराली है।
इसकी हिफाजत हम करेंगे अपनी जान से।।

आजाद, सुभाष, भगतसिंह,
सबने प्रयास किया था।
गुलामी की जंजीरो से,
इसको आजाद किया था।
तबसे हमने इसको फहराया मान से।।

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर (1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 04.02.2023

दिन- शनिवार

214

गीत- चलो ABCD बोलो...

तर्ज- मेरा नाम है चमेली...

चलो ABCD बोलो,
प्यारे बच्चों मुँह खोलो।
पढ़ लो वर्णमाला ये प्यारी मेरे साथ में।।

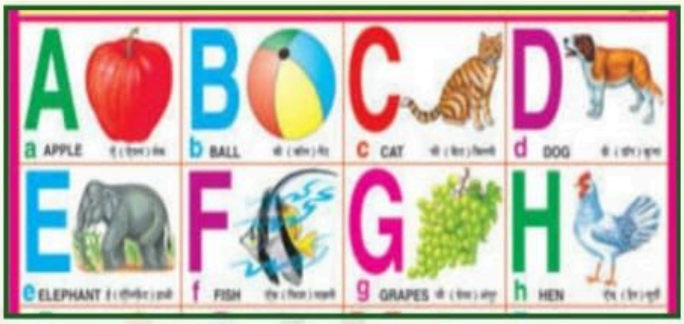

ओ जी छोटे-छोटे बच्चों,
सभी मेरे संग आओ।
खोलो मुँह अपना तो खोलो,
मेरी बात को दोहराओ।।

चलो ABCD बोलो,
प्यारे बच्चों मुँह खोलो।
रख लो वर्णमाला ये प्यारी अपने ध्यान में।।

A से Apple, B से Bat,
होती C फॉर है Cat.
D फॉर Door, Do, Day पढ़ना जोर-जोर से।।

चलो ABCD बोलो,
प्यारे बच्चों मुँह खोलो।
रख लो वर्णमाला ये प्यारी अपने ध्यान में।।

E फॉर होता Elephant,
F फॉर Fish, Fan और Fat.
G फॉर पढ़ना God, Good, Girl जोर-जोर से।।

चलो ABCD बोलो,
प्यारे बच्चों मुँह खोलो।
रख लो वर्णमाला ये प्यारी अपने ध्यान में।।

रचना
शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 06-02-2023

दिन- सोमवार

215

भारत माँ

तर्ज़ ~ कव्वाली

देशवासी जरा आँख खोलो,
देखो भारत की नैया डूबे ना कभी...।।

भारत माँ रज को माथे लगाओ,
धैर्य उत्साह अपना बढ़ाओ।
देखो कश्मीर से कन्याकुमारी,
भारत सीमा को अपने भूलो ना कभी।।

हिन्दू मुस्लिम हो सिख ईसाई,
आपस में हैं सब भाई-भाई
धर्म कोई हो कोई भी जाति,
भारत माता को अपने भूलो ना कभी।।

सब देशों में भारत महान है,
सुसंस्कृति भरा हिंदुस्तान है।
गर्व करते यहाँ जन्म लिया है,
अपनी संस्कृति देखो भूलो न कभी।।

देशवासी जरा आँख खोलो,
देखो भारत की नैया डूबे ना कभी...।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद- गोरखपुर

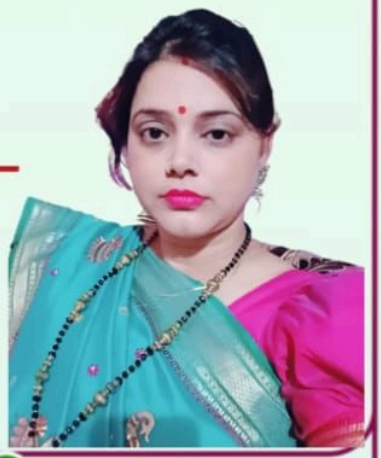

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 07/02/2023

दिन- मंगलवार

216 गीत- माई धरती पे सबसे महान हो लीं

तर्ज़- लोकगीत

माई धरती पे सबसे महान हो लीं।
देवी-देवता सरीखा भगवान हो लीं।।

ममता औ प्यार सब दिन, सदा से लुटावें।
गोदिया में लेई-लेई, लोरिया सुनावें।।
खातिर संतान के ऊ सुखधाम हो लीं,
माई धरती पे.....

संतान सुख में सारा, दुखवा भुलावें।
संतान खातिर सारा, कष्ट उठावें।।
सुन्दर सपना सजावें बन-बन भोली,
माई धरती पे.....

संतान माई खातिर, हियरा कऽ प्रान हो।
बेटा हो या बेटी, पूरा करँऽ अरमान हो।।
माई जीजाबाई, सीता सा गुमान हो लीं,
माई धरती पे.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०–बड़ागाँव
जनपद–वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 08/02/2023

दिन- बुधवार

217

शिव की महिमा

तर्ज- साजन मेरा उस पार है ..

शिव जी की महिमा अपरम्पार है।
शिव से ही जीवन का आधार है।।

तन में है भस्म सुशोभित भोले के,
वामांगे गौरा साजे भोले के।
डम-डम डमरू की झंकार है,
शिव से ही जीवन का आधार है।।
शिव जी की महिमा.....
शिव से ही जीवन.....

अक्षमाला, मुण्डमाला भी साजे हैं,
कैलाश शिखर में शिव जी विराजे हैं।
बम-बम भोले की जयकार है,
शिव से ही जीवन का आधार है।।
शिव जी की महिमा.....
शिव से ही जीवन.....

प्रतिरूप सत्य का शिव जी हैं मेरे,
अद्भुत छवि भोले की मन को घेरे।
दर्शन दो, ज्योति की पुकार है,
शिव से ही जीवन का आधार है।।
शिव जी की महिमा.....
शिव से ही जीवन.....

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 09/02/2023

दिन- गुरुवार

218

अन्तरराष्ट्रीय मित्रता दिवस

तर्ज- कोई दीवाना कहता है....

दोस्त बनकर किसी की राहों में कांटे ना बनना तुम,
अगर की है किसी से दोस्ती उसको निभाना तुम।
यह रिश्ता खूबसूरत-सा दिलों में प्रेम का बन्धन,
लाख कठिनाइयाँ आयें मगर इसको बचाना तुम।।

मित्र ऐसे हों जीवन में जो मुश्किल में ना घबराये,
सुदामा, कृष्ण जैसी मित्रता हरदम वे निभायें।
रूप और रंग से पहचान ना होती है मित्रों की,
हमारे चेहरे की उलझन जो पलभर में समझ जायें।।

मित्र के बिन सभी खुशियाँ जिन्दगी भी अधूरी है,
खून के रिश्तों के संग संग मित्र होना जरूरी है।
याद आती हैं वो यादें मुलाकातें भी बचपन की,
दोस्त की मुस्कुराहट से मेरी मुस्कान पूरी है।।

रचना-
मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
ब्लॉक- सादाबाद
जनपद- हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 10.02.2023

दिन- शुक्रवार

219

तर्ज़- तुम्ही मेरे मन्दिर, तुम्ही मेरी पूजा.....

गीत- अपना तिरंगा

ये अपना तिरंगा है प्राणों से प्यारा,
समर्पित वतन को है तन-मन हमारा।

चन्दन हमारी माटी करते हैं पूजा,
बढ़के देशभक्ति से नहीं धर्म दूजा।
देश का दुश्मन हमको नहीं है गंवारा,
समर्पित वतन को है तन-मन हमारा।।

जांबाज वीरों ने लुटा दी जवानी,
तब आयी आजादी की ऋतु ये सुहानी।
टूटे नहीं देखो अपना चमन ये प्यारा,
समर्पित वतन को है तन-मन हमारा।।

अपने लहू से सबने सींचा वतन को,
मुस्कान दे दी अपनी वीरों ने चमन को।
गुलिस्तां है हमको ये दुनिया से प्यारा,
समर्पित वतन को है तन-मन हमारा।।

सरहद पे आँखें उठाए ना कोई,
हिम्मत हमारी आजमाए ना कोई।
जुल्मोसितम हमको नहीं अब गंवारा,
समर्पित वतन को है तन-मन हमारा।।

ये अपना तिरंगा.....

रचना- पूनम नैन, (स0अ0)
उ0 प्रा 0वि0 मुकंदपुर
छपरौली, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 11/02/2023

दिन- शनिवार

220

तर्ज - मैय्या,ओ गंगा मैय्या!

गीत - शिव वन्दना

शीश पे गंगा, गौरा संगा,
है कैलाश विराजे।
तन बाघम्बर, और मृगछाला,
कण्ठ में विषधर साजे।।
बाबा, ओ भोले बाबा----

औघड़दानी, अमिट वरदानी,
आशुतोष है वो तो,
जो सबने है त्याग दिया,
उसे अपनाते वो तो।।
बाबा ओ-----

भूत-प्रेत हैं उनके चेले,
तन है भभूत रमाये।
तीनों लोक मेंउनसे बढकर,
नहीं कोई दूजा आये।।
बाबा ओ----

फाल्गुन और सावन मास में,
धूम है मचती भारी।
कष्ट पडे जब भी दुनिया पर,
तके दुनिया उनको ओर सारी।।
बाबा ओ----

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर (1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 13-02-2022

दिन- सोमवार

221

तर्ज- अगर तेरी मुहब्बत का सहारा...
गीत- तुम्हारे दर पे जो आये.....

तुम्हारे दर पे जो आये,
भला उसका सदा होता।
अगर कोई नहीं माने,
तुम्हें, तो दोष ही होता।। तुम्हारे दर...

जमाना मानता तुमको,
पूरी फरियाद होती है।
बहे उर ज्ञान की धारा,
नदी सागर में खोती है।।
भक्त भगवान बन जाये,
जगत में गान फिर होता।
तुम्हारे दर पे जो आये,
भला उसका सदा होता।।
अगर न.....दोष ही होता।।

पुकारा है तुम्हें जिसने,
सुनी है टेर आकर के।
दिए वरदान भक्तों को,
आस पूरी की जाकर के।।
ज्ञान गीता में भर दीन्हा,
पढे जो भी भला होता।
तुम्हारे दर पे जो आये,
भला उसका सदा होता।।
अगर.....दोष ही होता।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 14-02-2023

दिन- मंगलवार

222

जीवन की आशा

तर्ज़ ~ आ चल के तुझे मैं ले के चलू
एक ऐसे गगन के तले..

अजनबी हो रहे रिश्ते यहाँ,
जीवन में खुशी न दिखे।
हर चेहरे पर मायूसी है,
न मुस्कान के फूल खिले।।

एक रोज तो सूरज जागे,
आकाश से धरती मिले।
नदिया के दोनों तट पर,
प्यासे पक्षी फिर मिले।
जहाँ सभी जन हों अपने,
उस देश को हम भी चलें।।
हर चेहरे पर मायूसी.....

हम उड़ें जो बीच गगन में,
धरती पर परियाँ नाचें।
देव भी थोड़ा सा रुककर,
मुस्कान सभी को बांटें।
सबके जीवन में हों खुशियाँ,
परछाई न गम की मिले।।
हर चेहरे पर मायूसी....

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद- गोरखपुर

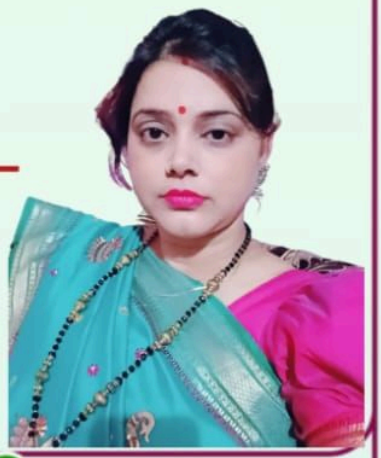

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 15.02.2023

दिन- बुधवार

223

गीत-चाँद सी हैं परी

तर्ज- जानम देख लो मिट गयीं दूरियाँ...

चाँद सी हैं परी ये सभी बेटियाँ..
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...
चाँद सी हैं परी ये सभी बेटियाँ..
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...
हर ख़ुशी इनसे है, जन्नतों का जहाँ...
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...

बेटियाँ ही तो लाती खुशी, रौनकें...
बेटियों से मिली है सदा जन्नतें...
बेटियों ने छुआ है नया आसमाँ...
माँ की ममता हैं, बाबा की ये हसरतें...
चाँद सी हैं परी ये सभी बेटियाँ..
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...

इनको कमतर न समझो कभी बेटों से...
अब तो करती सभी काम हैं बेटियाँ...
दो कुलों को बढ़ाती, सजाती सदा...
चाँद तक छा गई शेरनी बेटियाँ...
चाँद सी हैं परी ये सभी बेटियाँ...
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...

चाँद सी हैं परी ये सभी बेटियाँ..
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...
हर ख़ुशी इनसे है, जन्नतों का जहाँ...
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...

चाँद सी हैं परी ये सभी बेटियाँ..
बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ, बोलो हाँ...
बोलो हाँ....बोलो हाँ.....बोलो हाँ....बोलो हाँ....

रचना

शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 16.02.2023

दिन- गुरुवार

224

तर्ज़- होंठों से छूलो तुम

गीत - सरस्वती वन्दना

हे ज्ञान दायिनी माँ! सदज्ञान हमें देना।
हे आदिशक्ति जननी! स्वर-ताल हमें देना।

कर में धारण वीणा, माँ हंस सवारी है।
तू बैठी कमल पे माँ, लगती बड़ी प्यारी है।
मेरे कंठ में लय सरगम, चरणों में जगह देना।
हे आदिशक्ति जननी! स्वर-ताल हमें देना।।

संगीत की दुनिया में, होता है अंश तेरा।
अब ज्ञान के अमृत से, चमका दो भाग्य मेरा।
वीणा की मधुर ध्वनि से, एक गीत हमें देना।
हे आदिशक्ति जननी! स्वर-ताल हमें देना।।

टूटे शब्दों से माँ, क्या गीत सुनाऊँ मैं?
अज्ञान ग्रसित हूं माँ, कैसे गुनगुनाऊँ मैं?
विद्या की धनी मैया, सद्बुद्धि हमें देना।
हे आदिशक्ति जननी! स्वर-ताल हमें देना।।

रचना- मंजू शर्मा (स0अ0)
प्रा0 वि0 नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 17/02/2023

दिन- शुक्रवार

225

सरस्वती वन्दना

तर्ज- चाँदी जैसा रंग है..

सुरों की देवी माँ शारदे, करते तुम्हें प्रणाम।
दो आशीष ज्ञान का मैया, आओ हमरे धाम।।

वीणावादिनी ध्यान तुम्हारा, मन से हम हैं लगाते।
बहा दो माता सुर की धारा, शीश तुम्हें है झुकाते।।
दया बरसती रहे सदा ही, गीत रहे तेरे गाते।।
सजा स्वरांजलि हंस वाहिनी,करते तेरे नाम।
दो आशीष ज्ञान का मैया, आओ हमरे धाम।।

वाणी की देवी तू बागेश्वरी, श्वेत वसन है धारे।
वेदों में है गान तुम्हारा, तुम्हीं से स्वर हैं सारे।।
कलम हमेशा चलती रहे, यूँ अँधकार तू तारे।।
सुरों की बगिया रहे महकती, सुबह हो या शाम।
दो आशीष ज्ञान का मैया, आओ हमरे धाम।।

बल देती है वीणा उनको, जग से जो हैं हारे।
दीन बाल हम करते विनती, सुत हम माँ हैं तिहारे।।
कर जोड़े हम कब से खड़े हैं, मुखड़ा तेरा निहारे।।
विमल ज्ञान से हमें नवाजो, जीवन हो अभिराम।
दो आशीष ज्ञान का मैया, आओ हमरे धाम।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 18.02.2023

दिन- शनिवार

226

तर्ज़....मिलती है ज़िंदगी में मोहब्बत कभी कभी

गीत - बालिका शिक्षा

आओ पढ़ाएँ बेटियाँ बेटों के साथ ही,
रोशन करेंगीं नाम ये बेटों के साथ ही।

दे दो जन्म इन्हें भी, मत मारो कोख में,
दुनिया ये ही चलाती हैं बेटों के साथ ही।
आओ पढ़ाएँ....

दो-दो कुलों की शान को बेटी ही तो बढ़ाती,
इनके भी सपने सच करो बेटों के साथ ही।
आओ पढ़ाएँ....

बेटों से कम ना आँकिए ये बेटियाँ हमारी,
छूकर दिखा रही नभ को बेटों के साथ ही।
आओ पढ़ाएँ....

वरदान सृष्टि के लिए होती हैं बेटियाँ,
दे दो बराबरी का हक बेटों के साथ ही।
आओ पढ़ाएँ....

रचना - पूनम नैन (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 मुकंदपुर
छपरौली, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 20/02/2023

दिन- सोमवार

227 गीत- चला शिवजी के धामवाँ

तर्ज़- लोकगीत

महाशिवरात्रि पर्व मनाई लऽ,
चला शिवजी के धामवाँ।
जल अभिषेक कइके मोहाइ लऽ,
चला शिवजी के धामवाँ।।

शिवजी के धामवाँ हो भोला के धामवाँ,
औघड़दानी, गौरा पति जी के धामवाँ।
भांग-धतूरा, बेलपत्र चढ़ाइ लऽ,
चला शिवजी के धामवाँ।।

मंदिर, शिवाला में धूम मचल बा,
विश्वनाथ बाबा के रूपवा खिलल बा।
आपन दुखवा के चल के मिटाइ लऽ,
चला शिवजी के धामवाँ।।

शम्भू हैं न्यारे, महादेव हैं न्यारे,
रुद्र, महेश को भक्त सभी प्यारे।
चलि त्रिलोचन के आशीष पाइ लऽ,
चला शिवजी के धामवाँ।।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०-बड़ागाँव
जनपद-वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 21/02/2023

दिन- मंगलवार

228

शिव भजन

तर्ज- तुम ही मेरे मन्दिर.....

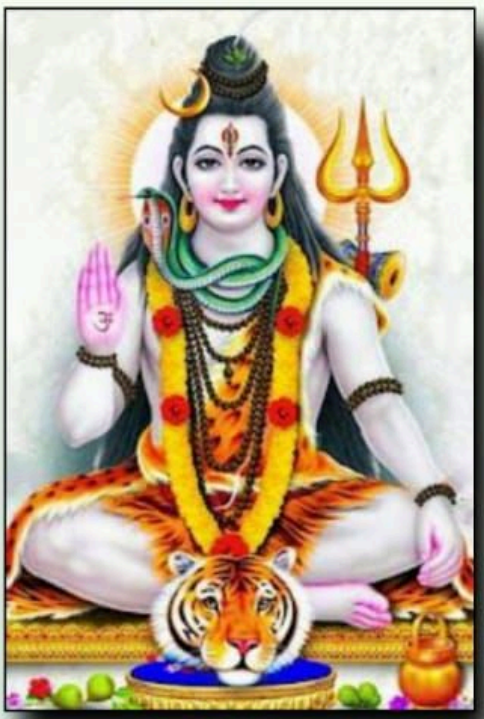

तुम ही शिव-शम्भू, तुम ही हो कृपाला।
गले मुण्डों की माला, त्रिशूल विशाला।।

देवों पर जब भी मुसीबत है आयी,
प्रभु आपने ही दूर भगायी।
हाथों में डमरु, पहने मृगछाला,
गले मुण्डों की माला, त्रिशूल विशाला।।
तुम ही शिव-शम्भू.....

देव और दानव में युद्ध हुआ था,
दोनों ने तब समुद्र मन्थन किया था।
कहलाये नीलकण्ठ, पिया विष का प्याला,
गले मुण्डों की माला, त्रिशूल विशाला।।
तुम ही शिव-शम्भू.....

नन्दी की सवारी, भस्मी, सर्पमाला,
गौरा इनकी पत्नी, गणपति लाला।
सर पर सोहे चन्दा निराला,
गले मुण्डो की माला, त्रिशूल विशाला।।
तुम ही शिव-शम्भू.....

भक्तों की भक्ति में रमते त्रिपुरारी,
इच्छा पूरी कर दे भक्तों की सारी।
कुछ भी ना मांगे, मेरा भोला भाला,
गले मुण्डों की माला, त्रिशूल विशाला।।
तुम ही शिव-शम्भू.....

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

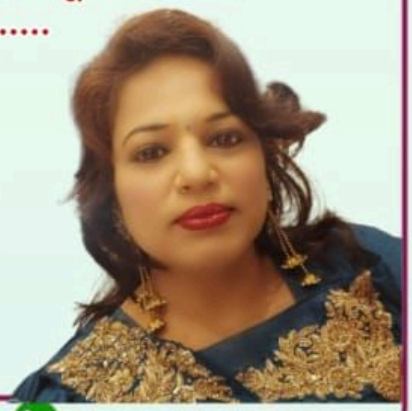

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 22-02-2023

दिन- बुधवार

229

तर्ज... माँ ओ माँ, पास बुलाती है..

गीत- भ्रूण हत्या

आओ माँ.... आओ माँ.....

बेटी बुलाती है,
यह समझाती है।
बेटी भी दुनिया मे अब,
नाम कमाती है.. कमाती है...

कि बेटी को भी चलो पढ़ाते हैं,
किस्मत वाले वो हैं, जो बेटी पाते हैं।
बेटे का मान होता है,
बेटी सम्मान नही पाती।।

उनसे पूँछों जिनके घर
महिलायें नही होती,
घर को सजाती हैं।
सही राह बताती हैं,
तुमको जन्म देने में ,
हर दर्द सह जाती है.. जाती है...
बेटी भी अब....

आओ बेटी तुमको, कहीं छिपा लूँ मैं।
कोख में हत्या होने से बचा लूँ मैं।
तेरी हत्या होने,
मेरी आँखे रोती हैं।
बेटी खोने से,
माँ कई रात न सोती है।।

माँ सबको समझाती है,
माँ दुख यह उठाती है।
जान ये जाती है,
कोख में जब माँ के,
कोई बेटी मारी जाती है.. मारी जाती है
बेटी भी अब दुनिया में,
नाम कमाती है...

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

230

तर्ज- गोरे रंग पे न इतना गुमान कर...

गीत- तू जल का न इतना दोहन कर...

तू जल का न इतना दोहन कर,
वरना सबके संग पछतायेगा।
मैं कहूँ सीख मेरी मानेगा-2,
तो तू भी सुरक्षित हो जायेगा।।
तू जल का न........ पछतायेगा।।

हो..ओ..ओ कोई नहीं रहता है,
जग में केवल बस नाम ही रहता।
कर्म शुभ करने से,
संसार में परिणाम शुभ मिलता।।
जग में केवल बस नाम ही रहता,
मानो कही मेरी, तुम सब जो,
संसार सुखी, न दुःख आयेगा।
मैं कहूँ सीख........... जायेगा।।

हो..ओ..ओ करो प्रकृति का रक्षण,
बातों से काम नहीं जग में होते।
पथ पर आगे चलिए,
ऐसे न व्यर्थ निज जीवन को खोते।।
मेरी बातों को तू परख यहाँ,
वरना अँधियारा छा जायेगा।
मैं कहूँ सीख...... जायेगा।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 24.02.2023

दिन- शुक्रवार

231

गीत-देश अपना साफ रखना....

तर्ज- आये हो मेरी ज़िन्दगी में तुम बहार बनके...

हो.....ओ...हो.....ओ...आ....आ...
देश अपना साफ रखना तुम सब प्रयास करके-2-2
मेरी बात को तुम सुनना...
हाय...
मेरी बात को तुम सुनना, हाँ ध्यान पूरा रखके।
देश अपना साफ रखना तुम सब प्रयास करके...

चौबारे साफ रखना, सड़कों का ध्यान रखना-2
हर गाँव की गली का पूरा खयाल रखना।
लायेगी रंग मेहनत खुद पाँव-पाँव चलके...2
मेरी बात को तुम सुनना...2
देश अपना साफ रखना तुम सब प्रयास करके-2-2

बस स्टाप हो या स्टेशन, या अस्पताल जाना-2
बन जिम्मेदार नागरिक, न गन्दगी फैलाना।
इस देश को सजाना, घर अपना तुम समझके...
मेरी बात को तुम सुनना...2
देश अपना साफ रखना तुम सब प्रयास करके-2-2

रचना
शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 25/02/2023

दिन- शनिवार

232

तर्ज- साजन मेरा उस पार है--

ऋतु गीत

धरती पर छाई बहार है,
फूलो से सजा संसार है।

बसन्त ऋतु ऐसे छायी है,
नवयौवना बन धरा मुस्कायी है -2
ऐसे मौसम से सबको प्यार है।।
धरा पर छायी---

शरद ऋतु अब जा चुकी,
पतझड़ की ऋतु अब बीत गयी।
लोहड़ी, सक्रांति अब जा चुकी,
होली का सबको इन्तजार है।।
धरा पर छायी----

है मौसम ये आपसी सदभाव का,
हो अन्त सभी के भेद-भाव का।
दुनिया में फैलाएँ इतनी खुशियाँ,
रखें भावना यही बरकरार है।।
धरा पर छायी----

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर (1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

233

भोले का दर्शन

तर्ज़ ~ किसी पत्थर की मूरत से...

भोले शिव शम्भू दर्शन का,
मेरे मन में इरादा है।
बने बाराती शम्भू के,
गौरा जी से मिलने का वादा है।।

चले संग में जो नन्दी जी,
ब्रह्मा विष्णु जी संग में चलें।
मुदित मन जागरण करता,
सभी गण आज संग में चलें।
साथ में चलती जोगिनियाँ,
भूत बेताल से नाता है।।
बने बाराती शम्भू के....

कान में बिच्छू हैं सोहे,
कण्ठ में सर्पों की माला।
हाथ में डमरू ले करके,
नाचते शम्भू मतवाला।
करें श्रृंगार बन दुल्हा,
माथ चन्दा मुस्काता है।।
बने बाराती शम्भू के....

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद- गोरखपुर

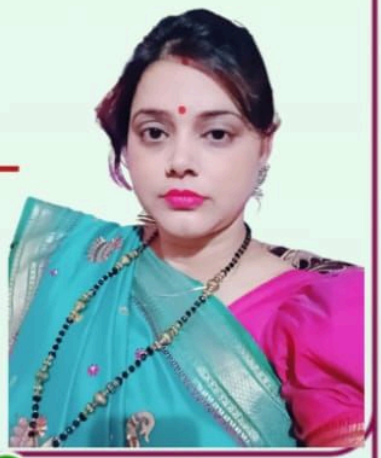

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 28.02.2023

दिन- मंगलवार

234 गीत- ईश्वर तेरी माया...

तर्ज़ - तू प्यार का सागर है..

ईश्वर तेरी माया का, गुणगान करेंगे हम,
तेरी महिमा मालिक, दिन-रात जपेंगे हम-2
ईश्वर तेरी माया का, गुणगान करेंगे हम-2
ईश्वर तेरी माया का....

ये जीवन है दुःख का सागर,
तुम ही हो तारणहार-2
मैं हूँ तेरी शरण विधाता,
भवसागर से तार-2
दुनिया के थपेड़ों से, मालिक बच जाएँ हम...
मालिक बच जाएँ हम...
ईश्वर तेरी माया का, गुणगान करेंगे हम-2

बचपन खोया खेल, जवानी,
खुशियाँ पल भर की-2
कोई न जाने इस माया की,
कैसी जादूगरी-2
मद, मोह और लोभ न हो, पापों से बचाओ तुम।
कि आये तेरी शरण में हम...
ईश्वर तेरी माया का, गुणगान करेंगे हम-2

रचना

शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

रचनाकारों की सूची

1 शहनाज बानो, चित्रकूट
2 जुगल किशोर त्रिपाठी, झांसी
3 भावना शर्मा, मेरठ
4 शिखा वर्मा, सीतापुर
5 सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
6 अरविंद कुमार सिंह, वाराणसी
7 ज्योति विश्वकर्मा, बांदा
8 मंजू शर्मा, हाथरस
9 पूनम नैन, बागपत
10 हेमलता गुप्ता, अलीगढ़

मार्गदर्शन
राजकुमार शर्मा, चित्रकूट
तकनीकी सहयोग
जितेन्द्र कुमार, बागपत
ज्योति सागर, बागपत

संकलन :- काव्य मंजरी टीम, मिशन शिक्षण संवाद